भारत का उज्वल अतीत और अगले सहस्राब्दि की चुनौतियां

जी.सुब्रमण्य भट, तकनीकी सहायक,
मांगलूर अनुसंधान केंद्र

सारे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसकी सदियों की सांस्कृतिक परंपरा है । हमारे देश की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती दो साल पहले मनाई गई थी । भारत आज एक शक्तिशली राष्ट्र है । विश्वभर में आज भारत का स्थान महत्वपूर्ण है । हर क्षेत्र में हमारे देश ने कई उपलब्धियों को हासिल किया है । इस संदर्भ में यह ज़रूरी है कि हम हमारे देश के अतीत के बारे में कुछ सोचें, कुछ जानकारी प्राप्त करें । तभी हमें मालूम पडेगा कि हम कहाँ से कहाँ तक पहुँच गये और आगे हमें क्या करना है ।

महात्मा ईसा के जन्म के बाद 2000 वर्ष पूरे होनेवाले है । इन दो हज़ार वर्षों के दौरान भारत के अतीत के बारे में बहुत जानकारी उपलब्ध है । कई राजा - महाराजाओं ने इस देश में राज किया । कई महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने विभिन्न धर्मों की स्थापना की । आज सारे विश्व में भारत में ही सबसे ज़्यादा जाति और धर्म के लोग एकसाथ रहते हैं । हमारा देश अनेकता में एकता की अद्वितीय मिसाल है । अट्ठारहवीं शताब्दी में जब अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत में प्रवेश किया, तब भारत छोटे छोटे राज्यों में विभाजित हुआ था । तीसरी शताब्दी में उत्तर और दक्षिण भारत के कुछ भागों में गुप्ता राजाओं का सम्राज्य था । इन राजाओं की अवधि को स्वर्णयुग कहा जाता है क्योंकि इस अवधि में भारत हर क्षेत्र में आगे था । वैज्ञानिक तथा संख्याशास्त्रज्ञ आर्यभटा का जन्म इस अवधि में हुआ जिसका नाम हमारे देश के पहले अंतरिक्ष उपग्रह को रखा गया है । इसके बाद उत्तर भारत में पृथ्वीराज चौहान जैसे राजाओं ने विदेशी आक्रमणकारियों से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए युद्ध किया और अपने प्राणों का बलिदान किया । चौदहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई । कुछ समय बाद अंग्रेज भारत में आये और उन्होंने छोटे छोटे राज्यों को अपनी कब्जे में लिया और कुछ ही वर्षों में सारे भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना की । अंग्रेजों के खिलाफ कई राजाओं ने लडाई की जिन में हैदर अलि, टिप्पु सुल्तान, झान्सी

की रानी ..क्ष्मीबाई आदि प्रसिद्ध है । इन राजा-रानियों द्वारा अपने राज्यों की रक्षा के लिए निर्मित क़िलाएँ आज भी मौजूद हैं जो इनकी बहादुरी और देशप्रेम के प्रतीक हैं ।

भारत के उज्वल अतीत में कई संत और महापुरुषों का जन्म हुआ था जिन्होंने अलग अलग विचारधाराओं के धर्मों की स्थापना की थी । जैन धर्म के संस्थापक भगवान महावीर का जन्म ई.पू. 599 में हुआ और भगवान बुद्ध का जन्म ई.पू.567 में हुआ जिन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की । दो सहस्राब्दि से ज्यादा पुराने इन धर्मों के अनुयायी आज सारे विश्व में रहते हैं । इस सहस्राब्दि में जानदेव, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीरा बाई और संत तुकाराम जैसे महापुरुषों का भी जन्म हुआ जिन के द्वारा रचाये गये गीत आज भी लोकप्रिय है और लोगों को सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं । पिछले दो शताब्दियों में महात्मा गांधी , विवेकानंद और बी.आर.अंबेड्कर जैसे महापुरुषों ने इस महान भारत में जन्म लिया । स्वामी विवेकानंद ने भारत की संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए काम किया और भारतवासियों के मन में अपनी संस्कृति और परंपरा के बारे में जागरण पैदा किया । बी.आर. अंबेड्कर दलितों के ऊपर होनेवाले अत्याचारों के खिलाफ लड़कर उनको भारत की मुख्य धारा में लाये और इस काम के लिए वे अमर हो गये । महात्मा गाँधीजी हमारे राष्ट्रपिता हैं, उन्होंने अपनी शांति और अहिंसा के मंत्र से अंग्रेजों से भारत को आजादी दिलवाई । इसलिए वे सारे विश्व के लिए महात्मा बन गये ।

हज़ारों साल पहले लिखे गये रामायण और महाभारत जैसे पुराण ग्रंथ, भगवद्गीता, वेद और उपनिषद् आज भी मशहूर हैं और भारत वासियों के लिए पवित्र है । आज के आयुर्वेद तथा अलोपति चिकित्सा विधानों के कई विधान हज़ारों वर्ष पुराने वेदों में उल्लिखित हैं । इस से यह सिद्ध होता है कि हमारे पूर्वज बहुत बुद्धिमान थे । ई.पु.3000 से 1500 तक की अवधि में उत्तर भारत में सिन्धू नदी के आस पास प्राप्त अवशेषों से उन लोगों के उच्च शैली के जीवन के बारे में जानकारी मिली है । इसे इंडस घाटी की सभ्यता जानी जाती है । उस पुराने युग में स्नानगृह, अतिथीगृह और गंदा पानी निकालने के लिए विशेष व्यवस्था मौजूद थी । स्वच्छता और तंदुरुस्ती को उन लोगों ने विशेष महत्व दिया था । यह अवशेष हमारी ऊँची परंपरा की साक्षी हैं ।

संख्याशास्त्र और विज्ञान के क्षेत्र में भी विश्व को भारत के पूर्वजों की देन अद्वितीय है । आग्रभटा, भास्कराचार्य, मशहूर वैज्ञानिक सर. सी.वी. रामन, जे सी.बोस, होमी भाभा और सुब्रमण्यम चंद्रशेखर ने कई आविष्कार किए और उनमें दो वैज्ञानिकों ने नोबेल पुरस्कार प्राप्त किये । शून्य का

आविष्कार भारत में ही हुआ था । इस तरह इस महान देश का अतीत भी महान है ।

आज भारत विश्व की अग्रणी राष्ट्रों में एक है । अगले सहस्राब्दि की चुनौतियों के बारे में सोचने से पहले भारत की आज की स्थिति पर नजर डालना ज़रूरी है । जब 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ तब हम हर क्षेत्र में पीछे थे । हमारी अर्थव्यवस्था की हालत बहुत बुरी थी । खाद्यान्नों का उत्पादन बहुत कम था । प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी भारत बहुत पीछे था । खाद्यान्नों की आपूर्ति के लिए हम अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों पर निर्भर थे । भारत एक गरीब राष्ट्र माना जाता था । पहले प्रधानमंत्री पं. जवहरलाल नेहरु ने पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा भारत को एक नई दिशा दिखाई । पहली पंचवर्षीय योजना 1951 में शुरू हुई थी । आज हम नौवीं पंचवर्षीय योजना में हैं । सत्तर के दशक में खाद्यान्नों के उत्पादन में हरित क्रांति हुई । इस के कारण भारत आज खाद्यान्नों के उत्पादन में आत्मनिर्भर है । हम कई खाद्यानों को निर्यात करने की क्षमता रखते है। इस के साथ साथ औद्योगिक क्षेत्र में भी भारत ने बहुत तरक्की प्राप्त की और कई उपलब्धियों को प्राप्त किया । आज वैज्ञानिक क्षेत्र में हम बहुत आगे पहुँच गये हैं । हमारे उपग्रह कई संख्या में बाह्याकाश में प्रक्षेपित किए जा चुके हैं । यह उपग्रह दूर संचार, मौसम, रेडियो, दूरदर्शन आदि क्षेत्र में आवश्यक योगदान दे रहे हैं । पोखरण में किये गये अणुविस्फोट के बाद हम रक्षा क्षेत्र में भी मज़बूत बन गये हैं । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हमारा देश अमेरिका, रूस, फ्रान्स या जर्मनी जैसे विकसित देशों से किसी क्षेत्र में कम नहीं हैं । कृषि और औद्योगिक क्षेत्र की इस असाधारण प्रगति के साथ साथ अगली सहस्राब्दि की चुनौतियाँ प्रारंभ होती है।

हम ने अपने पूर्वजों से एक हरी - भरी भूमि विरासत में पाई थी । आज हमारे सबसे बडी चुनौती पर्यावरण की रक्षा करनी है । हमारे देश के वन हर दिन घटते जा रहे हैं । कृषि और औद्योगिक क्षेत्र के विकास केलिए पेडों को काटा जाता है । इस से वन्य प्राणियों के वास के लिए जगह और आहार की कमी पड जाती है और पर्यावरण का संतुलन बिगडता है । आज कई वन्य जीवी और पेड-पौधे सदा के लिए मिट गए हैं । इस अनिर्बंधित रूप से होने वाला वन का नाश हमें रोकना चाहिए और आगे की पीढी के लिए इस हरियाली को बचाना हम सब की जिम्मेदारी है ।

इस सहस्राब्दि के अंत तक भारत की जनसंख्या एक अरब पार करेगी । अगले कुछ ही दशकों में भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आबादीवाला देश बनने की संभावना है ।

जनसंख्या की वृद्धि को रोकना हमारे देश केलिए एक गंभीर समस्या है क्योंकि इस के कारण अन्य सभी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है । आर्थिक विकास के लाभ को जनसंख्या की वृद्धि खा जाती है । सरकार के कई कार्यक्रमों के बावजूद जनसंख्या वृद्धि को रोकने में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है । बढती हुई आबादी की गति से खाद्यान्न उत्पादन करने केलिए उपलब्ध कृषि क्षेत्र सीमित है । पीने का पानी का स्तर घटता जा रहा है । सभी को रहने के लिए मकान और रोजगार उपलब्ध कराना मुश्किल हो जाता है । इस के अलावा प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं को उपलब्ध कराने में करोडों रुपयों की लागत आ जाती है । इसलिए सरकार के साथ साथ यह हम सब की जिम्मेदारी है कि हम बढती हुई आबादी पर अंकुश लगाएँ । अन्यथा देश के वार्षिक उत्पाद का एक बडा हिस्सा इन सुविधाओं को उपलब्ध कराने में व्यर्थ हो जाएगा । इस से देश की प्रगति के लिए वित्त संसाधनों की कमी पड जाती है । इस समस्या को हल करने के लिए सभी को साक्षर बनाने की जरूरत है । हमारे देश में आर्थिक विकास तेज गति से हो रहा है । लेकिन इस के साथ साथ सामाजिक असमानता जो दूर होनी चाहिए, वह नहीं हो रही है । इसके कारण यह विकास अर्थहीन बन जाता है । जब हर एक देशवासी सुशिक्षित बन जाता है, तभी अंधविश्वास और सामाजिक असमानताएं दूर हो जाती हैं । जमसंख्या वृद्धि को रोकने में यह एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है ।

पर्यावरण का प्रदूषण एक अन्य चुनौती है । आज सारे विश्व में यह एक बडी समस्या है । विकसित देशों ने प्रदूषण को कुछ स्तर तक नियंत्रण में रखा है लेकिन हमारे देश में यह बढता जा रहा है । उद्योग और कृषि के विकास के साथ-साथ जल और वायुमंडल का प्रदूषण बढ रहा है । प्रदूषण को रोकने केलिए हर राज्य में प्रदूष नियंत्रण बोर्ड स्थापित किए गए हैं लेकिन प्रदूषण पर कोई अंकुश नहीं लगा है । इसे रोका नहीं गया तो आने वाले वर्षों में पीने का शुद्ध पानी मिलना कठिन हो जाएगा । जब बडी इकाई प्रदूषण कम करने का संयंत्रों की स्थापना करती है, छोटी इकाइयों को ऐसी कोई मज़बूरी नहीं है, इन पर निगरानी रखना बहुत जरूरी है । ऐसी इकाइयाँ ज्यादतर नदी के किनारे रहते हैं जिनसे छोडा गया कलुषित त्याज्य नदी के पानी को कलुषित करता है और जीव जंतुओं का विनाश हो जाता है । इन त्याज्यों में कई खतरनाक विषयुक्त रासायनिक मौजूद हैं । कृषि में इस्तेमाल होनेवाले रासायनिक उर्वरक मिट्टी को कलुषित करते हैं । इनके स्थान पर हमें कुदरती उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए । प्रदूषण रोका नहीं गया तो एक दिन इस धरती के सभी जीवजंतुओं का विनाश हो जाएगा ।

नागरीकरण भारत के लिए एक बडी समस्या है । इसे रोकना एक अन्य चुनौती है । बडे शहरों में वाहन हजारों की संख्या में हर दिन बढती जा रही है । इनकी विषयुक्त धुआँ से वायुमंडल इतना कलुषित हो गया है कि सांस लेना भी मुश्किल हो गया है ।

राजधानी दिल्ली दुनिया के सबसे ज्यादा प्रदूषित नगरों में एक माना जाता है । प्रदूषण से लोग टी.वी., कैन्सर जैसे बीमारियों का शिकार बनते हैं । आजकल देहातों में शहरों की सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण और उच्च शिक्षा और नौकरी की तलाश में लोग शहरों में चले जाते हैं । इनके कारण शहरों में आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराना मुश्किल हो जाता है । हमें गाँवों के विकास की ओर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए । सभी सुविधाओं को गाँव-गाँव में उपलब्ध कराने से इस समस्या पर रोक लग जाएगा । इन सभी समस्याओं को हल करने केलिए दीर्घकालीन योजनाओं की आवश्यकता है ।

देश की सुरक्षा भी एक गंभीर चुनौती है । आतंकवाद आज विश्वव्यापी है । इस से प्राणहानी और देश की संपत्ति की नुक्सान पहुँचती है । आतंकवाद के कारण देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न हो जाती है । देश की एकता और अखंडता को हर कीमत पर कायम रखने की ज़रूरत है । हर देशवासी के मन में राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और सम्मान जगाना चाहिए । अपसी भेदभाव, सांप्रदायिक झगडे और सामाजिक असमानताएं हमारी प्रगति के खिलाफ हैं । महिलाओं पर होने वाले अत्याचार रोकना चाहिए और महिलाओं को पुरुषों के बराबर हर क्षेत्र में आगे आने का मौका देना चाहिए ।

अगली सहस्राब्दि में हम सब मिलकर इन चुनौतियों का सामना करें तो महात्मा गाँधी का रामराज्य का सपना साकार बन जाएगा । भारत विश्व का अग्रमान्य राष्ट्र बन जाएगा ।

❑